मिश्रित (ब्लेंडेड) अधिगम – अपेक्षित आधुनिक अध्यापन शैली

सुजाता साहा*

अधिगम में इलेक्ट्रॉनिक तकनीक का उपयोग आधुनिक युग की ज्ञानार्जन प्रक्रिया का एक अनिवार्य अंग है। ई-अधिगम के माध्यम से पाठ्य-सामग्री को विद्यार्थियों की व्यक्तिगत भिन्नता के अनुरूप विविध विकल्पों से समृद्ध करना तथा शिक्षण-अधिगम को अधिक रोचक एवं संसाधन संपन्न बनाना संभव होता है। विशिष्ट शिक्षा के क्षेत्र में भी ई-अधिगम के बिना गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की कल्पना नहीं की जा सकती। किन्तु इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि हम शिक्षण - अधिगम के परंपरागत स्वरूप का पूर्णत: परित्याग कर दें। उक्त दोनों में से कौन-सा उपागम अथवा मिश्रित (ब्लेंडेड) अधिगम कितना प्रभावपूर्ण होगा, यह कई कारकों पर निर्भर करता है। प्रस्तुत लेख में शोध अध्ययनों के आलोक में ई-अधिगम एवं परंपरागत अधिगम के संक्षिप्त तुलनात्मक विश्लेषण के उपरान्त मिश्रित (ब्लेंडेड) अधिगम की उपादेयता सिद्ध की गयी है।

आज की स्मार्ट कक्षा वह है, जहाँ इलेक्ट्रॉनिक संचार माध्यमों विशेषकर कंप्यूटर और इंटरनेट द्वारा सीखने-सिखाने की प्रक्रिया संचालित की जाती है। पाठ के प्रस्तुतीकरण को रोचक एवं प्रभावपूर्ण बनाने हेतु शिक्षा के सभी स्तरों पर पावर पॉइन्ट प्रस्तुतीकरण का प्रयोग हो रहा है। ऑनलाइन अधिगम की अन्य प्रविधियों से भी हम परिचित हो रहे हैं। डिजिटल साक्षरता के बिना आज कोई व्यक्ति साक्षर नहीं कहला सकता।

परंपरागत शिक्षण शैली में सभी अधिगमकर्ताओं के समक्ष सीमित विकल्प होते हैं, जबकि ऑनलाइन वातावरण में हर अधिगमकर्ता को अपनी विशिष्ट विशेषताओं एवं अधिगम शैली के अनुरूप सीखने की स्वतंत्रता होती है। साथ ही, ई-अधिगम से उनमें

* *एसोसिएट प्रोफ़ेसर,* शिक्षा विभाग, वसंत महिला महाविद्यालय, के.एफ.आई, राजघाट, वाराणसी।

स्व-अध्ययन की अभिप्रेरणा, तत्संबंधी अच्छी आदतों, अन्वेषणात्मक प्रवृत्ति तथा बेहतर सामग्री के चयन करने की योग्यता का विकास होता है। परंपरागत कक्षा की तुलना में ई-अधिगम में स्वक्रिया अधिक होती है। पाठ समझने और निर्धारित कार्य पूरा करने में अपेक्षाकृत अधिक समय देना होता है। इससे स्वत: ही विद्यार्थियों में उच्चस्तरीय अभिप्रेरणा और उत्तरदायित्व भाव का विकास होता है। सभी प्रकार के विशिष्ट बालकों के संदर्भ में भी कंप्यूटर के विभिन्न सॉफ्टवेयर एवं इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के प्रयोग के परिणामस्वरूप उनकी शिक्षण प्रक्रिया का अपेक्षाकृत सरल, रोचक एवं शीघ्र फलप्रद होना संभव हो पाया है।

इसके बावजूद शोध अध्ययन इस तथ्य को स्पष्ट करते हैं कि शिक्षक की आमने - सामने की उपस्थिति एवं विद्यार्थियों से उसकी अंतर्क्रिया, शैक्षिक उपलब्धि एवं संतोष को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है (स्वान, 2001)। जिन विद्यार्थियों मे स्वअध्ययन की अनुशासनपूर्ण आदत सुविकसित नहीं होती, वे ई-पाठ्यक्रमों को पूरा करने में कठिनाई महसूस करते हैं। सभी ई-अधिगमकर्ताओं का संप्रेषण कौशल इतना अच्छा नहीं होता कि वे अपने अनुदेशनकर्ता द्वारा डिज़ाइन किये गए पाठ की सही व्याख्या कर सकें एवं अपनी अभिव्यक्ति उसे समझा सकें। अत: प्राथमिक विद्यालयी स्तर पर ही विद्यार्थियों में कंप्यूटर अभिव्यक्ति संबंधी कौशलों के सही विकास पर ध्यान दिया जाना आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य भी है। विद्यार्थियों की लिखित-मौखिक अभिव्यक्ति की सीमाओं से उच्चतर शिक्षा के स्तर पर भी अध्यापकगण आए दिन जूझते रहते हैं, जिनका निदान एवं उपचार शिक्षा के प्राथमिक स्तर पर ही हो जाना चाहिए था। इस ओर ध्यान देने से हम ई-अधिगम का अधिकाधिक लाभ सभी विद्यार्थियों तक पहुँचा सकने में सक्षम होंगे।

परंपरागत शिक्षण में पाठ एवं शिक्षक के साथ विद्यार्थियों की संवेगात्मक संलग्नता अधिक होती है। यही कारण है कि (विजिल 2014) ने ई-शिक्षण में अधिगमकर्ताओं को संवेगात्मक रूप से संलग्न करने की सिफ़ारिश की है। इससे वे ज़्यादा सीखते हैं। (पॉलोंबो, 2000)

शिक्षण की दोनों शैलियों के अपने लाभ और अपनी सीमाएँ हैं। कौन-सा तरीका अधिक प्रभावपूर्ण सिद्ध होगा– यह निर्णय शिक्षण परिस्थिति और प्रदान किए जाने वाले अधिगम अनुभव की गुणवत्ता पर निर्भर करता है। चाहे एक नीरस परंपरागत शिक्षण हो अथवा अच्छी प्रकार से डिज़ाइन न किया गया ई-अधिगम मॉडयूल – दोनों ही शिक्षण उद्देश्यों की समुचित प्राप्ति में सहायक सिद्ध नहीं हो सकते। यह भी उल्लेखनीय है कि ई-अधिगम संबंधी पाठों को पाठ्यवस्तु, उपलब्ध संसाधनों एवं स्थान विशेष की संस्कृति के अनुरूप ढालना होगा। उदाहरणार्थ– अमेरिका में तैयार किये गये सामाजिक अध्ययन के सभी ई-प्रकरणों का हम भारत में यथारूप प्रयोग नहीं कर सकते। शिक्षक की भूमिका यहाँ भी अपरिहार्य है और यह भूमिका सामग्री को बेहतर ढंग से प्रस्तुत करने की है।

परिश्रम से तैयार किये गए परंपरागत पाठ एवं भली-भाँति डिज़ाइन किए गए ई-पाठ में से आधुनिक समय में किसे वरीयता देनी चाहिए एवं दोनों प्रकार

के पाठों के अधिगम-परिणामों में क्या अंतर होगा– इन प्रश्नों के उत्तर की खोज में कई शोध कार्य हुए हैं, जिनमें से संयुक्त राज्य अमेरिका के शिक्षा-विभाग की रिपोर्ट विशेष रूप से ध्यान देने योग्य है। यह रिपोर्ट पिछले दशक के 50 शोध अध्ययनों पर आधारित है, जिसका शीर्षक है 'इवेल्युएशन ऑफ़ एविडेन्स बेस्ड प्रेक्टिसेज़ इन ऑनलाइन लर्निंग – ए मेटा एनालिसिस एंड रिव्यू ऑफ़ ऑनलाइन लर्निंग' ('Evaluation of Evidence based Practices in Online Learning – A Meta Analysis and Review of Online Learning')।

इस रिपोर्ट का निष्कर्ष था कि औसत रूप से ऑनलाइन अधिगम परिस्थिति में विद्यार्थियों ने आमने-सामने की परंपरागत शिक्षण परिस्थिति की तुलना में थोड़ा बेहतर निष्पादन किया। किंतु निष्पादन में यह अंतर सार्थक नहीं था। इस विश्लेषण में यह विशेष उल्लेख किया गया कि दोनों उपागमों के पृथक प्रयोग की तुलना में ऑनलाइन शिक्षण शैली एवं परंपरागत शिक्षण शैली को संयुक्त कर ब्लेंडेड या मिश्रित शैली के प्रयोग से अधिक लाभप्रद परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं। वैसे भी मध्यम मार्ग सदैव से श्रेयस्कर माना जाता रहा है।

परंपरागत अधिगम को ई-अधिगम से उपयुक्त रूप से संयुक्त करना ही मिश्रित या ब्लेंडेड अधिगम है। मिश्रित अधिगम के लाभों को इस प्रकार रेखांकित किया जा सकता है–

1. मिश्रित अधिगम में ई-अधिगम की भाँति विद्यार्थियों में एकाकीपन की भावना नहीं रह जाती है। उन्हें शिक्षण प्रक्रिया के दौरान अपने शिक्षक एवं सहपाठियों के साथ होने का निरंतर अहसास होता रहता है।
2. शिक्षक और विद्यार्थियों के बीच पारस्परिक सहयोग के अपेक्षाकृत अधिक अवसर होते हैं।
3. संसाधनों की उपलब्धता बढ़ जाती है।
4. एक से अधिक शिक्षकों की दक्षता का लाभ मिलता है।
5. पाठ-प्रस्तुतीकरण के अधिक रोचक और विविधतापूर्ण होने के कारण अधिगम प्रक्रिया में अधिगमकर्ता की संलग्नता बढ़ जाती है।
6. परंपरागत कक्षा में एक बार में ही समस्त सूचनाएँ देना कभी-कभी उबाऊ और थकान भरा हो सकता है। इलेक्ट्रॉनिक भंडारण उपकरणों के प्रयोग से अपनी सुविधानुसार विद्यार्थी कक्षा के बाद अतिरिक्त सूचनाएँ घर ले जाकर उन्हें पढ़ और समझ सकते हैं।
7. मिश्रित अधिगम प्रक्रिया में मनोरंजन से अधिक समावेश के भी अवसर उपलब्ध होते हैं।

निष्कर्ष

शिक्षण और अधिगम की कौन-सी शैली अपनाई जाए, इस संदर्भ में विद्यार्थियों को चयन की स्वतंत्रता मिलनी आवश्यक है (लेन्सर, 2011)। अधिगम का तरीका चाहे परंपरागत हो, ऑनलाइन हो अथवा मिश्रित, सर्वश्रेष्ठ परिणाम तब प्राप्त हो सकेंगे, जब विद्यार्थियों को यह स्पष्ट प्रतीत हो कि उनका अधिगम अनुभव न सिर्फ़ अंतर्क्रियात्मक और रोचक रहा अपितु भावनापूर्ण भी रहा। इस दृष्टि से मिश्रित (ब्लेंडेड) अधिगम को आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक युग की अपेक्षित शिक्षण शैली माना जा सकता है।

संदर्भ

पॉलोंबो, वेस, आर. 2000. *इमोशन एंड लर्निंग, ट्रेनिंग एवं डेवलपमेंट,* 54(11), 44-48

लेन्सर, एस. 2011. *इफ़ेक्टिवनेस ऑफ़ ई-लर्निंग वर्सेज़ क्लासरूम लर्निंग*, पोस्टेड इन ई-लर्निंग, अप्रैल 7, 2011, www.coursepark.com

विजिल, वी.पी. 2014. *मीनिंगफुल लर्निंग – टीचर्स प्रेज़ेंस एंड लर्नर इंगेजमेंट इन द ऑनलाइन क्लासरूम*, 30 जुलाई, 2014, http://vpadillavigil.wordpress.com/2014/07/30/meaningful-learning-teacher...

स्वान, के. 2001. वर्चुअल इंटरैक्शन – डिज़ाइन फ़ैक्टर्स अफ़ेक्टिंग स्टूडेंट सैटिस्फ़ैक्शन एंड परसीव्ड लर्निंग इन एसिंक्रोनस ऑनलाइन कोर्सेस, *डिस्टेंस एजूकेशन*, 22 (2), 806-33